भारतीय समाजशास्त्री

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» भारत में समाजशास्त्र का उद्भव और शुरुआती चुनौतियाँ

प्रश्न 1 (आसान). भारत में समाजशास्त्र की औपचारिक शिक्षा किस वर्ष शुरू हुई?
उत्तर – 1919 ई. में

प्रश्न 2 (आसान). बंबई के अलावा, किन दो अन्य विश्वविद्यालयों ने 1920 में समाजशास्त्र और मानवविज्ञान में शिक्षण और शोधकार्य शुरू किया?
उत्तर – कलकत्ता तथा लखनऊ

प्रश्न 3 (मध्यम). भारतीय समाजशास्त्र के लिए शुरुआती समय में 'क्या वास्तव में भारत को समाजशास्त्रा जैसे किसी विषय की आवश्यकता थी भी या नहीं?' यह सवाल क्यों उठा?
उत्तर – यह सवाल इसलिए उठा क्योंकि भारत एक उपनिवेश था और आधुनिकता का अनुभव भी कर रहा था, इसलिए पश्चिमी समाजशास्त्र का मॉडल सीधे भारतीय संदर्भ पर लागू करना मुश्किल था। इसकी भूमिका और स्वरूप स्पष्ट नहीं था।

प्रश्न 4 (कठिन). भारत में समाजशास्त्र के उद्भव के समय 'आधुनिकता का पहला अनुभव और औपनिवेशिक पराधीनता का अनुभव दोनों आपस में घुले-मिले थे' – इस कथन का क्या अर्थ है और इसने समाजशास्त्र के विकास को कैसे प्रभावित किया?
उत्तर – इस कथन का अर्थ है कि भारत एक तरफ पश्चिमी आधुनिक विचारों और परिवर्तनों को अपना रहा था, वहीं दूसरी ओर वह ब्रिटिश शासन के अधीन गुलाम भी था। इस दोहरे अनुभव ने भारतीय समाज को समझने के तरीकों को जटिल बना दिया, क्योंकि समाजशास्त्र को सिर्फ आधुनिकता को समझने के लिए ही नहीं, बल्कि औपनिवेशिक शोषण और उसकी विशिष्ट समस्याओं को भी संबोधित करना था। इसने भारतीय समाजशास्त्रियों को अपने खुद के प्रश्न गढ़ने और भारतीय संदर्भ के अनुसार विषय को ढालने के लिए प्रेरित किया।

» एल.के. अनंतकृष्ण अय्यर: भारत के पहले सामाजिक मानवविज्ञानी

प्रश्न 5 (आसान). एल.के. अनंतकृष्ण अय्यर ने अपने करियर की शुरुआत किस पद से की थी?
उत्तर – क्लर्क

प्रश्न 6 (आसान). उन्हें किस रजवाड़े के नृजातीय सर्वेक्षण में मदद के लिए बुलाया गया था?
उत्तर – कोचीन रजवाड़े

प्रश्न 7 (मध्यम). अय्यर जी का भारत में मानवविज्ञान के लिए सबसे महत्वपूर्ण अकादमिक योगदान क्या था?
उत्तर – उन्होंने कलकत्ता विश्वविद्यालय में भारत के पहले स्नातकोत्तर मानवविज्ञान विभाग की स्थापना में मदद की।

प्रश्न 8 (कठिन). भले ही उनके पास औपचारिक मानवविज्ञान की डिग्री नहीं थी, फिर भी उन्हें किस प्रतिष्ठित पद पर चुना गया और किस विश्वविद्यालय ने उन्हें मानद उपाधि दी?
उत्तर – उन्हें इंडियन साइंस कांग्रेस के नृजातीय विभाग का अध्यक्ष चुना गया और जर्मनी विश्वविद्यालय द्वारा डॉक्ट्रेट की मानद उपाधि दी गई।

» शरत चंद्र रॉय: जनजातीय समाज के अग्रणी अध्येता

प्रश्न 9 (आसान). शरत चंद्र रॉय मुख्य रूप से किस पेशे से जुड़े थे?
उत्तर – वकील

प्रश्न 10 (आसान). उन्होंने किस क्षेत्र की जनजातियों का गहन अध्ययन किया?
उत्तर – छोटानागपुर

प्रश्न 11 (मध्यम). शरत चंद्र रॉय को भारत में मानवविज्ञान के क्षेत्र में 'पायनियर' क्यों माना जाता है?
उत्तर – क्योंकि उन्होंने भारत में मानवविज्ञान को एक विषय के रूप में स्थापित करने और जनजातीय समाजों का गहन क्षेत्रीय अध्ययन करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, खासकर ऐसे समय में जब यह विषय नया था।

प्रश्न 12 (कठिन). शरत चंद्र रॉय ने 'मैन इन इंडिया' नामक जर्नल की स्थापना क्यों की और इसका क्या महत्व था?
उत्तर – उन्होंने जनजातीय समाजों पर अपने शोध और लेखों को प्रकाशित करने के लिए 1922 में 'मैन इन इंडिया' जर्नल की स्थापना की। यह अपने तरह का पहला जर्नल था और इसने भारत में मानवविज्ञान शोध को एक मंच प्रदान किया, जिससे यह विषय और अधिक मान्यता प्राप्त कर सका।

» जी.एस. घूर्ये: भारतीय समाजशास्त्र के संस्थापक

प्रश्न 13 (आसान). जी.एस. घूर्ये ने किस विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र विभाग की स्थापना की?
उत्तर – बंबई विश्वविद्यालय

प्रश्न 14 (आसान). 'इंडियन सोशियोलॉजिकल सोसायटी' के संस्थापक अध्यक्ष कौन थे?
उत्तर – जी.एस. घूर्ये

प्रश्न 15 (मध्यम). जी.एस. घूर्ये के दो प्रमुख लेखन विषयों के नाम बताइए।
उत्तर – जाति और प्रजाति, जनजाति

प्रश्न 16 (कठिन). जी.एस. घूर्ये को 'भारतीय समाजशास्त्र के संस्थापक' क्यों कहा जाता है? विस्तार से समझाइए।
उत्तर – उन्होंने मुंबई विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र विभाग की स्थापना की, इंडियन सोशियोलॉजिकल सोसायटी और सोशियोलॉजिकल बुलेटिन की शुरुआत की, और जाति, जनजाति, नातेदारी जैसे विविध विषयों पर व्यापक लेखन किया, जिससे भारत में समाजशास्त्र को एक संस्थागत और अकादमिक पहचान मिली।

» घूर्ये के जनजाति पर विचार: 'पिछड़े हिंदू समूह'

प्रश्न 17 (आसान). जी.एस. घूर्ये ने भारतीय जनजातियों को किस रूप में देखा?
उत्तर – 'पिछड़े हिंदू समूह'

प्रश्न 18 (आसान). घूर्ये के अनुसार, क्या जनजातियाँ एक 'distinct cultural group' थीं?
उत्तर – नहीं, उन्होंने उन्हें हिंदू समाज का हिस्सा माना।

प्रश्न 19 (मध्यम). घूर्ये और वेरियर एलविन के विचारों में मुख्य अंतर क्या था?
उत्तर – घूर्ये जनजातियों को मुख्यधारा में शामिल करने के पक्षधर थे ('पिछड़े हिंदू समूह'), जबकि एलविन उन्हें एक अलग सांस्कृतिक समूह मानकर उनके 'संरक्षण' के पक्षधर थे।

प्रश्न 20 (कठिन). घूर्ये के विचार, 'these ill-effects are not confined to tribal cultures alone but can be observed equally in all backward and depressed classes of Indian society' का क्या महत्व था?
उत्तर – इस विचार से घूर्ये ने तर्क दिया कि जनजातियों के साथ होने वाला शोषण केवल उनकी विशिष्ट पहचान का मुद्दा नहीं है, बल्कि यह भारतीय समाज के व्यापक पिछड़ेपन और दलित वर्गों की समस्या का हिस्सा है, जिसे विकास की 'आवश्यक कठिनाई' के रूप में देखा जाना चाहिए। यह उन्हें मुख्यधारा से जोड़ने की उनकी दलील को मजबूत करता था।

» घूर्ये के जाति और प्रजाति पर विचार

प्रश्न 21 (आसान). हर्बर्ट रिजले ने जाति और प्रजाति के संबंध को समझाने के लिए किन विशेषताओं पर ज़ोर दिया?
उत्तर – शारीरिक विशेषताओं पर, जैसे खोपड़ी की चौड़ाई और नाक की लंबाई।

प्रश्न 22 (आसान). घूर्ये की किताब का क्या नाम था जिसमें उन्होंने जाति और प्रजाति पर अपने विचार रखे?
उत्तर – 'Cast and Race in India'.

प्रश्न 23 (मध्यम). घूर्ये ने रिजले के सिद्धांतों को 'आंशिक सत्य' क्यों माना, और किस क्षेत्र के लिए?
उत्तर – घूर्ये ने इसे 'आंशिक सत्य' माना क्योंकि उनका कहना था कि रिजले का सिद्धांत 'केवल उत्तरी भारत' के लिए ही व्यापक रूप से सही था, पूरे देश के लिए नहीं।

प्रश्न 24 (कठिन). घूर्ये ने रिजले के 'औसत' के आधार पर किए गए वर्गीकरण में क्या समस्या बताई?
उत्तर – घूर्ये ने बताया कि रिजले केवल औसत पर ध्यान देते थे, लेकिन वे समुदाय के भीतर की विविधताओं और परिवर्तनों को नज़रअंदाज़ करते थे, जिससे एक विशिष्ट मापदंड को पूरे समुदाय पर लागू करना गलत हो जाता है।

» घूर्ये द्वारा जाति की परिभाषा

प्रश्न 25 (आसान). घूर्ये के अनुसार, 'जाति एक खंडीय विभाजन है' का क्या मतलब है?
उत्तर – इसका मतलब है कि समाज छोटी-छोटी, बंद इकाइयों, यानी जातियों में बंटा हुआ है।

प्रश्न 26 (आसान). घूर्ये द्वारा दी गई जाति की कोई दो विशेषताएं बताइए।
उत्तर – सोपानिक विभाजन और विवाह पर कठोर प्रतिबंध।

प्रश्न 27 (मध्यम). घूर्ये के अनुसार, जाति व्यवस्था में 'व्यवसाय का चुनाव' कैसे तय होता था?
उत्तर – घूर्ये ने बताया कि 'choice of occupation' यानी व्यवसाय का चुनाव जन्म से ही तय हो जाता था। व्यक्ति जिस जाति में पैदा होता था, उसे उसी जाति से जुड़ा पारंपरिक काम करना पड़ता था और अपनी मर्जी से दूसरा व्यवसाय चुनने की आजादी नहीं थी।

प्रश्न 28 (कठिन). घूर्ये की जाति की छह विशेषताओं में से 'सामाजिक अंतःक्रिया पर प्रतिबंध' और 'भिन्न अधिकार व कर्तव्य' का भारतीय समाज पर क्या प्रभाव पड़ा, उदाहरण सहित समझाइए।
उत्तर – 'सामाजिक अंतःक्रिया पर प्रतिबंध' का मतलब था कि विभिन्न जातियों के लोग आपस में मेलजोल, भोजन या विवाह नहीं कर सकते थे। इससे समाज में दूरी बढ़ी और एक-दूसरे के प्रति समझ कम हुई। जैसे, अलग-अलग जातियों के लोग एक ही कुएं से पानी नहीं भर सकते थे या एक साथ बैठकर खाना नहीं खा सकते थे। 'भिन्न अधिकार व कर्तव्य' का अर्थ था कि हर जाति के लिए नियम और जिम्मेदारियां अलग थीं। उच्च जातियों को अधिक अधिकार और सम्मान मिलता था, जबकि निम्न जातियों को कम अधिकार और अधिक बंधन सहने पड़ते थे, जिससे भेदभाव और असमानता बढ़ती गई। उदाहरण के लिए, कुछ जातियों को सार्वजनिक स्थानों पर जाने या विशेष ज्ञान प्राप्त करने की मनाही थी, जबकि दूसरों को इसका विशेषाधिकार था। इन दोनों विशेषताओं ने मिलकर समाज में गहरी खाई पैदा की और गतिशीलता को बाधित किया।

» डी.पी. मुकर्जी: एक बहुआयामी बुद्धिजीवी

प्रश्न 29 (आसान). डी.पी. मुकर्जी का जन्म कब हुआ था?
उत्तर – 5 अक्टूबर 1894

प्रश्न 30 (आसान). डी.पी. मुकर्जी ने किन दो विषयों में स्नातकोत्तर की डिग्री प्राप्त की थी?
उत्तर – इतिहास और अर्थशास्त्र

प्रश्न 31 (मध्यम). डी.पी. मुकर्जी ने लखनऊ विश्वविद्यालय में किन विभागों में पढ़ाया?
उत्तर – अर्थशास्त्र और समाजशास्त्र

प्रश्न 32 (कठिन). डी.पी. मुकर्जी ने भारतीय समाजशास्त्रियों के लिए किस बात पर सबसे अधिक जोर दिया?
उत्तर – भारतीय सामाजिक परंपराओं को गहराई से समझने पर, और पश्चिमी विचारों का अंधानुकरण न करने पर।

» डी.पी. मुकर्जी के परंपरा और परिवर्तन पर विचार

प्रश्न 33 (आसान). डी.पी. मुकर्जी के अनुसार, भारतीय समाज का सबसे खास लक्षण क्या है?
उत्तर – भारतीय सामाजिक व्यवस्था

प्रश्न 34 (आसान). 'जीवंत परंपरा' से क्या तात्पर्य है?
उत्तर – ऐसी परंपरा जो भूतकाल से जुड़ी हो और वर्तमान के अनुरूप बदलती भी रहे।

प्रश्न 35 (मध्यम). डी.पी. मुकर्जी ने परिवर्तन के कौन से तीन सिद्धांत बताए?
उत्तर – श्रुति, स्मृति और अनुभव

प्रश्न 36 (कठिन). पश्चिम के विपरीत, डी.पी. मुकर्जी भारतीय समाज में परिवर्तन के लिए किन कारकों को महत्वपूर्ण मानते थे?
उत्तर – वह अनुभव और प्रेम जैसे आंतरिक गैर-आर्थिक कारकों को महत्वपूर्ण मानते थे, जबकि पश्चिम में आर्थिक कारक ज़्यादा प्रभावी थे।

» ए.आर. देसाई: एक मार्क्सवादी समाजशास्त्री

प्रश्न 37 (आसान). ए.आर. देसाई को किस विचारधारा से जोड़ा जाता है?
उत्तर – मार्क्सवादी विचारधारा से।

प्रश्न 38 (आसान). देसाई की सबसे प्रसिद्ध पुस्तक का नाम क्या है?
उत्तर – 'The Social Background of Indian Nationalism'.

प्रश्न 39 (मध्यम). देसाई के अनुसार, भारतीय राष्ट्रवाद के पीछे कौन से प्रमुख कारण थे?
उत्तर – उनके अनुसार, भारतीय राष्ट्रवाद के पीछे सामाजिक और आर्थिक कारण थे, जो विभिन्न वर्गों की ज़रूरतों से जुड़े थे।

» ए.आर. देसाई के कल्याणकारी राज्य पर विचार

प्रश्न 40 (आसान). देसाई ने कल्याणकारी राज्य पर कौन सा प्रसिद्ध निबंध लिखा?
उत्तर – 'The Myth of the Welfare State'

प्रश्न 41 (आसान). कल्याणकारी राज्य की अर्थव्यवस्था कैसी होती है?
उत्तर – मिश्रित अर्थव्यवस्था

प्रश्न 42 (मध्यम). ए.आर. देसाई के अनुसार कल्याणकारी राज्य की कोई एक विशेषता बताइए।
उत्तर – कल्याणकारी राज्य एक सकारात्मक राज्य होता है, जो सामाजिक नीतियों को सक्रिय रूप से लागू करता है।

प्रश्न 43 (कठिन). देसाई ने किन आधारों पर 'कल्याणकारी राज्य' की आलोचना की कि वह एक 'भ्रम' है?
उत्तर – देसाई ने तर्क दिया कि कल्याणकारी राज्य गरीबी, सामाजिक भेदभाव और आय की असमानताओं को दूर करने में विफल रहा है; वह पूंजीवादियों के अधिक लाभ कमाने की प्रवृत्ति को नियंत्रित नहीं कर पाता; और स्थायी विकास व पूर्ण रोजगार देने में भी असमर्थ है। इसलिए यह एक भ्रम है।

» एम.एन. श्रीनिवास: ग्रामीण अध्ययन और सामाजिक मानवविज्ञान

प्रश्न 44 (आसान). एम.एन. श्रीनिवास किस विश्वविद्यालय से पढ़े थे?
उत्तर – मुंबई और ऑक्सफोर्ड।

प्रश्न 45 (आसान). श्रीनिवास के गुरु कौन थे?
उत्तर – घूर्ये।

प्रश्न 46 (मध्यम). श्रीनिवास ने गाँवों को भारतीय समाज की किस महत्वपूर्ण इकाई के रूप में देखा?
उत्तर – एक आवश्यक सामाजिक पहचान।

प्रश्न 47 (कठिन). लुई ड्यूमों जैसे समाजशास्त्रियों ने गाँव को एक सामाजिक इकाई मानने पर क्या आपत्ति उठाई थी?
उत्तर – उनका मानना था कि जाति जैसी सामाजिक संस्थाएँ गाँव से अधिक महत्वपूर्ण थीं क्योंकि गाँव केवल कुछ लोगों का समूह था जो एक विशेष स्थान पर रहते थे, जबकि सामाजिक संस्थाएँ लोगों के साथ हर जगह जाती हैं।

» एम.एन. श्रीनिवास के गाँव संबंधी विचार

प्रश्न 48 (आसान). श्रीनिवास ने 'गाँव' को क्या माना?
उत्तर – एक आवश्यक सामाजिक पहचान और सामाजिक विश्लेषण की इकाई।

प्रश्न 49 (आसान). श्रीनिवास ने गाँवों का अध्ययन कैसे किया?
उत्तर – गाँवों में रहकर क्षेत्रीय कार्य (fieldwork) करके।

प्रश्न 50 (मध्यम). ब्रिटिश प्रशासक मानव वैज्ञानिकों ने भारतीय गाँवों को कैसे चित्रित किया था और श्रीनिवास ने इसकी आलोचना क्यों की?
उत्तर – उन्होंने गाँवों को 'स्थिर, आत्मनिर्भर, छोटे गणतंत्र' के रूप में चित्रित किया था। श्रीनिवास ने आलोचना की क्योंकि ऐतिहासिक साक्ष्य दिखाते हैं कि गाँव कभी स्थिर या आत्मनिर्भर नहीं थे, बल्कि हमेशा बदलते और क्षेत्रीय स्तर पर जुड़े रहते थे।

प्रश्न 51 (कठिन). एम.एन. श्रीनिवास और लुई डूमों के बीच 'गाँव' की अवधारणा को लेकर क्या मुख्य विवाद था? विस्तार से समझाएँ।
उत्तर – श्रीनिवास गाँव को एक 'आवश्यक सामाजिक पहचान' और समाजशास्त्र के लिए महत्वपूर्ण 'विश्लेषण इकाई' मानते थे, जो गतिशील और क्षेत्रीय रूप से जुड़ी हुई है। इसके विपरीत, लुई डूमों का तर्क था कि 'जाति' जैसी सामाजिक संस्थाएँ गाँव की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि गाँव केवल एक अस्थायी भौगोलिक समूह है जिसे छोड़ा जा सकता है, जबकि जाति जैसी संस्थाएँ व्यक्ति के साथ स्थायी रूप से जुड़ी रहती हैं। इसलिए डूमों ने गाँव को एक 'गुमराह करने वाली श्रेणी' माना।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. भारत में समाजशास्त्र की औपचारिक शिक्षा किस वर्ष और किस विश्वविद्यालय में शुरू हुई, तथा इसकी शुरुआती चुनौतियाँ क्या थीं?

› पहला कदम है साल और जगह की पहचान करना। किताब बताती है कि औपचारिक शिक्षा '1919 ई. में बंबई विश्वविद्यालय में' शुरू हुई।

› दूसरा कदम है चुनौतियों को समझना। सबसे बड़ी चुनौती थी कि भारत एक 'उपनिवेश' था।

› तीसरी चुनौती यह थी कि भारत 'आधुनिकता' और 'औपनिवेशिक पराधीनता' दोनों का अनुभव एक साथ कर रहा था, जिससे विषय की भूमिका तय करना मुश्किल था।

उत्तर – भारत में समाजशास्त्र की औपचारिक शिक्षा 1919 में बंबई विश्वविद्यालय में शुरू हुई। इसकी शुरुआती चुनौतियाँ यह तय करना था कि एक उपनिवेश के रूप में भारत में समाजशास्त्र की क्या भूमिका होगी, क्योंकि यह आधुनिकता और औपनिवेशिक अधीनता के दोहरे अनुभव से गुजर रहा था।

उदाहरण 2. एल.के. अनंतकृष्ण अय्यर का भारत में समाजशास्त्र के विकास में क्या योगदान था?

› सबसे पहले, हमें यह समझना होगा कि अय्यर जी ने एक क्लर्क के रूप में शुरुआत की थी, जो उनकी दृढ़ इच्छाशक्ति का प्रमाण है। 'उन्होंने अपने व्यवसाय की शुरुआत एक क्लर्क के रूप में की'।

› फिर, 'सन् 1902 में कोचीन के दीवान द्वारा इन्हें राज्य के नृजातीय सर्वेक्षण (ethnographic survey) में मदद के लिए कहा गया'। यह उनके शोध कार्य की शुरुआत थी, जहाँ उन्होंने अलग-अलग समुदायों का अध्ययन किया।

› उन्होंने 'महाविद्यालय के शिक्षक के रूप में, एरनाकुलम स्थित महाराजा कॉलेज में पढ़ाते हुए, इसके लिए उन्होंने सप्ताहांतों में नृजातीय विभाग में अवैतनिक सुपरिंटेंडेंट के रूप में कार्य किया' - मतलब वे बिना पैसे लिए भी काम करते रहे, सिर्फ अपने जुनून के लिए।

› सबसे महत्वपूर्ण योगदान यह है कि 'कलकत्ता विश्वविद्यालय में रीडर के रूप में उनकी नियुक्ति की गई, जहाँ उन्होंने भारत के सर्वप्रथम स्नातकोत्तर मानवविज्ञान विभाग की स्थापना करने में मदद की'। यह भारत में इस विषय को एक औपचारिक पहचान देने जैसा था।

› हालांकि उनके पास 'मानवविज्ञान में कोई औपचारिक उपाधि नहीं थी', फिर भी 'इंडियन साइंस कांग्रेस के नृजातीय विभाग का अध्यक्ष चुना गया' और 'जर्मनी विश्वविद्यालय द्वारा उन्हें डॉक्ट्रेट की मानद उपाधि दी गई'। यह उनके ज्ञान और योगदान की विश्वव्यापी पहचान थी।

उत्तर – एल.के. अनंतकृष्ण अय्यर ने भारत में सामाजिक मानवविज्ञान की नींव रखी। उन्होंने कोचीन रजवाड़े के नृजातीय सर्वेक्षणों में महत्वपूर्ण योगदान दिया, अलग-अलग जनजातियों और समुदायों का गहराई से अध्ययन किया। उनका सबसे बड़ा योगदान कलकत्ता विश्वविद्यालय में भारत के पहले स्नातकोत्तर मानवविज्ञान विभाग की स्थापना में रहा, जिससे यह विषय अकादमिक रूप से स्थापित हो सका। उन्हें राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उनके शोध और ज्ञान के लिए सराहा गया, भले ही उनके पास औपचारिक डिग्री न थी।

उदाहरण 3. शरत चंद्र रॉय ने किस जनजाति पर 'सर्वप्रसिद्ध लेखन कार्य' किया?

› शरत चंद्र रॉय का मुख्य कार्यक्षेत्र छोटानागपुर क्षेत्र था।

› उन्होंने इस क्षेत्र की जनजातियों पर गहन 'field studies' (क्षेत्रीय अध्ययन) किए।

› उनकी प्रसिद्ध पुस्तकों में विशेष रूप से 'Oraon', 'Munda', और 'Khariya' जनजातियों पर काम शामिल है।

उत्तर – उन्होंने ओराँव, मुंडा और खरिया जनजातियों पर सर्वप्रसिद्ध लेखन कार्य किया।

उदाहरण 4. भारतीय समाजशास्त्र के संस्थापक के रूप में जी.एस. घूर्ये के योगदान की चर्चा कीजिए।

› सबसे पहले, बताएं कि जी.एस. घूर्ये को 'भारतीय समाजशास्त्र के संस्थापक' क्यों कहा जाता है।

› फिर, उनके सबसे महत्वपूर्ण योगदानों में से एक, बंबई विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र विभाग की स्थापना और उसमें उनके 35 साल के कार्यकाल का जिक्र करें।

› इसके बाद, 'इंडियन सोशियोलॉजिकल सोसायटी' की स्थापना और 'सोशियोलॉजिकल बुलेटिन' पत्रिका के प्रकाशन में उनकी भूमिका बताएं।

› अंत में, उनके व्यापक लेखन विषयों जैसे जाति, प्रजाति, जनजाति, नातेदारी आदि का उल्लेख करें, जिससे पता चलता है कि उन्होंने समाजशास्त्र के कितने आयामों पर काम किया।

उत्तर – जी.एस. घूर्ये को 'भारतीय समाजशास्त्र के संस्थापक' के रूप में जाना जाता है क्योंकि उन्होंने बंबई विश्वविद्यालय में स्नातकोत्तर स्तर पर समाजशास्त्र विभाग की स्थापना की और 35 वर्षों तक उसके अध्यक्ष रहे। उन्होंने 1951 में 'इंडियन सोशियोलॉजिकल सोसायटी' की स्थापना की और 'सोशियोलॉजिकल बुलेटिन' नामक पत्रिका भी शुरू की, जिसने भारत में समाजशास्त्र को एक संस्थागत रूप दिया। उनके लेखन में 'जाति और प्रजाति', 'जनजाति', 'नातेदारी', 'परिवार और विवाह', 'संस्कृति' और 'धर्म' जैसे विस्तृत विषय शामिल थे, जिससे उन्होंने भारतीय समाजशास्त्र को एक मज़बूत नींव प्रदान की।

उदाहरण 5. घूर्ये ने जनजातियों को 'पिछड़े हिंदू समूह' क्यों कहा और इस पर क्या विवाद था?

› पहला चरण: घूर्ये का तर्क था कि जनजातियां लंबे समय से हिंदुत्व के साथ 'interacted' कर रही हैं और उनकी संस्कृति में हिंदू प्रभाव दिखता है।

› दूसरा चरण: उन्होंने माना कि जनजातियां 'process of adjustment' में पीछे रह गई हैं, लेकिन वे 'distinct cultural group' नहीं हैं।

› तीसरा चरण: विवाद वेरियर एलविन जैसे 'conservationists' से था, जो जनजातियों को अलग सांस्कृतिक समूह मानते थे और उन्हें मुख्यधारा से 'protect' करना चाहते थे ताकि उनका शोषण न हो।

› चौथा चरण: घूर्ये ने कहा कि शोषण सिर्फ जनजातियों तक सीमित नहीं, बल्कि सभी 'backward and depressed classes' में होता है, और यह वकिास की 'necessary difficulties' हैं।

उत्तर – घूर्ये ने जनजातियों को मुख्यधारा के हिंदू समाज का हिस्सा मानते हुए उन्हें 'पिछड़े हिंदू समूह' कहा, क्योंकि वे मानते थे कि वे लंबे समय से हिंदू संस्कृति से जुड़े रहे हैं, बस सामाजिक और आर्थिक विकास में पीछे रह गए हैं। इस पर वेरियर एलविन जैसे संरक्षणवादियों से विवाद था, जो जनजातियों को एक अलग सांस्कृतिक पहचान मानते हुए उनकी सुरक्षा के पक्ष में थे।

उदाहरण 6. घूर्ये ने हर्बर्ट रिजले के जाति और प्रजाति संबंधी विचारों की आलोचना क्यों की?

› पहले हमें समझना होगा कि रिजले का मुख्य तर्क क्या था। रिजले ने कहा कि भारत में 'जाति' का उद्भव 'प्रजाति' से हुआ होगा, और उन्होंने शारीरिक विशेषताओं (जैसे खोपड़ी की चौड़ाई, नाक की लंबाई) के आधार पर उच्च जातियों को आर्य और निम्न जातियों को अनार्य या अन्य प्रजातियों से जोड़ा।

› अब घूर्ये के विचार पर आते हैं। घूर्ये ने रिजले के तर्कों को पूरी तरह से गलत नहीं कहा, उन्होंने कहा कि 'वेफवल अंशतः सत्य' (only partially true) हैं।

› घूर्ये ने मुख्य आपत्ति यह जताई कि रिजले का सिद्धांत 'व्यापक रूप से वेफवल उत्तरी भारत वेफ लिए ही सही है' (only widely true for North India)। उन्होंने बताया कि भारत के अन्य भागों में वभिन्नि समूहों के बीच 'मानवमतिि माप बहुत व्यापक अथवा व्यवस्थित नहीं है' (human-metric measurements were not very wide or systematic)।

› इसका मतलब है कि घूर्ये ने दिखाया कि रिजले ने जो शारीरिक भिन्नताएं बताईं, वे पूरे भारत पर समान रूप से लागू नहीं होतीं और केवल औसत के आधार पर किसी समुदाय पर विशिष्ट मापदंड लागू करना सही नहीं है।

उत्तर – घूर्ये ने रिजले के सिद्धांतों की आलोचना इसलिए की क्योंकि उन्होंने माना कि रिजले का जाति और प्रजाति का संबंध बताने वाला सिद्धांत, जो शारीरिक विशेषताओं पर आधारित था, केवल उत्तरी भारत के लिए आंशिक रूप से सही था। घूर्ये ने दर्शाया कि पूरे भारत में अंतर-समूहों की शारीरिक भिन्नताएं इतनी व्यापक या व्यवस्थित नहीं थीं कि उन्हें प्रजाति के आधार पर वर्गीकृत किया जा सके। उन्होंने यह भी कहा कि सिर्फ औसत के आधार पर किसी समुदाय पर नियम लागू करना सही नहीं है, क्योंकि समुदायों के भीतर भी बहुत विविधता होती है।

उदाहरण 7. घूर्ये द्वारा दी गई जाति की 'सोपानिक विभाजन' और 'विवाह पर कठोर प्रतिबंध' वाली विशेषताओं को उदाहरण सहित समझाइए।

› पहले 'सोपानिक विभाजन' को समझाएंगे। घूर्ये के अनुसार, 'जाति व्यवस्था एक पदानुक्रमित विभाजन है' – 'hierarchical division' – इसका मतलब है कि समाज जातियों के आधार पर ऊपर से नीचे के क्रम में बंटा हुआ है।

› उदाहरण के लिए, अगर हम एक बहुमंजिला इमारत को देखें, तो सबसे ऊपर वाली मंजिल को सबसे ऊंचा माना जाता है, फिर उसके नीचे वाली, और सबसे नीचे वाली। वैसे ही, जाति व्यवस्था में कुछ जातियां 'उच्च' मानी जाती थीं, कुछ 'मध्यम' और कुछ 'निम्न'। यह एक श्रेणीबद्ध, 'graded' व्यवस्था थी, जहां हर जाति की अपनी एक निर्धारित जगह होती थी।

› अब 'विवाह पर कठोर प्रतिबंध' को समझेंगे। घूर्ये ने बताया कि 'जाति व्यवस्था में विवाह पर बहुत सख्त नियम होते थे' – 'strict restrictions on marriage'.

› इसका मतलब है कि किसी भी व्यक्ति को अपनी जाति के बाहर शादी करने की अनुमति नहीं होती थी। इसे 'बहिर्विवाह' (exogamy) या 'अंतर्जातीय वविाह' (inter-caste marriage) कहा जाता था, और यह पूरी तरह से नषिद्धि था।

› उदाहरण के लिए, अगर कोई लड़का 'A' जाति का है और कोई लड़की 'B' जाति की है, तो वे आपस में शादी नहीं कर सकते थे, चाहे वे एक-दूसरे को कितना भी पसंद करते हों। विवाह सिर्फ अपनी जाति के भीतर, 'अंतर्विवाह' (endogamy) ही

मान्य था। यह नियम जाति की शुद्धता बनाए रखने के लिए बनाया गया था।

उत्तर – घूर्ये के 'सोपानिक विभाजन' का अर्थ है कि समाज जातियों के आधार पर ऊपर-नीचे श्रेणीबद्ध होता है, जैसे एक बहुमंजिला इमारत की मंजिलें। 'विवाह पर कठोर प्रतिबंध' का अर्थ है कि अपनी जाति के बाहर विवाह करना पूर्णतः वर्जित था, जिससे अंतर्जातीय विवाह संभव नहीं थे।

उदाहरण 8. डी.पी. मुकर्जी को 'बहुआयामी बुद्धिजीवी' क्यों कहा जाता है? विस्तार से समझाइए।

› पहले हम देखेंगे कि डी.पी. मुकर्जी ने कौन-कौन सी डिग्रियाँ लीं। 'He obtained postgraduate degrees in History and Economics' - उन्होंने इतिहास और अर्थशास्त्र में स्नातकोत्तर की डिग्री ली।

› फिर हम देखेंगे कि उनकी रुचि और काम के क्षेत्र क्या थे। उन्होंने लखनऊ विश्वविद्यालय में अर्थशास्त्र और समाजशास्त्र पढ़ाया, 'he wrote many books in English and Bengali', उन्होंने अंग्रेजी और बंगाली में कई किताबें लिखीं।

› हम यह भी देखेंगे कि 'An Introduction to Indian Music' जैसी उनकी किताब बताती है कि वे सिर्फ अकादमिक विषयों तक सीमित नहीं थे, बल्कि कला और संस्कृति में भी उनकी गहरी समझ थी।

› इन सभी बातों से पता चलता है कि वे एक विषय के विशेषज्ञ नहीं थे, बल्कि उनकी रुचि और ज्ञान का दायरा बहुत विस्तृत था, 'covering Sociology, History, Economics, Literature, and even Music'.

› अतः, विभिन्न विषयों में उनकी गहरी पैठ और योगदान के कारण ही उन्हें 'बहुआयामी बुद्धिजीवी' कहा जाता है।

उत्तर – डी.पी. मुकर्जी को 'बहुआयामी बुद्धिजीवी' इसलिए कहा जाता है क्योंकि उन्होंने सिर्फ समाजशास्त्र ही नहीं, बल्कि इतिहास, अर्थशास्त्र, साहित्य और संगीत जैसे कई विभिन्न क्षेत्रों में गहन अध्ययन और लेखन कार्य किया। उनकी शिक्षा और कार्यक्षेत्र का व्यापक दायरा उनकी बहुमुखी प्रतिभा को दर्शाता है।

उदाहरण 9. डी.पी. मुकर्जी के अनुसार, भारतीय समाज में परिवर्तन लाने वाले सबसे प्रभावी आंतरिक गैर-आर्थिक कारण क्या हैं?

› डी.पी. मुकर्जी ने भारतीय समाज को पश्चिम से अलग माना, जहाँ आर्थिक कारण उतने प्रभावी नहीं थे।

› उन्होंने परिवर्तन के तीन सिद्धांत बताए: श्रुति (सुना हुआ ज्ञान), स्मृति (याद रखा हुआ ज्ञान), और अनुभव (व्यक्तिगत या सामूहिक)।

› इन तीनों में से उन्होंने 'अनुभव' को सबसे क्रांतिकारी सिद्धांत बताया।

› उनका मानना था कि 'सामूहिक अनुभव' और 'प्रेम' ही भारत में परिवर्तन के सबसे शक्तिशाली कारक हैं।

› उदाहरण के लिए, भक्ति आंदोलन ने प्रेम और सामूहिक अनुभवों के माध्यम से समाज में बड़ा बदलाव लाया, बिना किसी बड़े आर्थिक बदलाव के।

उत्तर – डी.पी. मुकर्जी के अनुसार, भारतीय समाज में परिवर्तन लाने वाले सबसे प्रभावी आंतरिक गैर-आर्थिक कारण 'सामूहिक अनुभव' और 'प्रेम' हैं, जो श्रुति और स्मृति जैसी परंपराओं को चुनौती देते हुए बदलाव लाते हैं।

उदाहरण 10. ए.आर. देसाई ने अपनी किस प्रमुख पुस्तक में भारतीय राष्ट्रवाद के सामाजिक पहलुओं का विश्लेषण किया?

› हमें यह याद रखना है कि ए.आर. देसाई एक मार्क्सवादी समाजशास्त्री थे जिन्होंने भारतीय राष्ट्रवाद पर काम किया।

› उनकी सबसे प्रसिद्ध रचना इसी विषय पर केंद्रित है।

› उस पुस्तक का नाम 'The Social Background of Indian Nationalism' है, जिसमें उन्होंने विस्तार से इस विषय पर अपने विचार रखे।

उत्तर – ए.आर. देसाई ने 'The Social Background of Indian Nationalism' नामक पुस्तक में भारतीय राष्ट्रवाद के सामाजिक पहलुओं का विश्लेषण किया।

उदाहरण 11. ए.आर. देसाई के अनुसार 'कल्याणकारी राज्य' की मुख्य आलोचना क्या थी?

› सबसे पहले, हम कल्याणकारी राज्य की विशेषताओं को समझेंगे। देसाई मानते थे कि यह एक 'सकारात्मक, लोकतांत्रिक और मिश्रित अर्थव्यवस्था' वाला राज्य होता है।

› फिर हम देसाई के प्रश्नचिह्नों को देखेंगे: क्या यह गरीबी, असमानता, पूंजीपतियों के लाभ पर नियंत्रण, स्थायी विकास और रोजगार पर ध्यान दे रहा है?

› अब हम उनके 'अवलोकन' पर आएंगे। उन्होंने ब्रिटेन, अमेरिका जैसे देशों का अध्ययन किया।

› अंत में, उनके 'निष्कर्ष' को देखेंगे: उन्होंने पाया कि ये राज्य अपने दावों पर खरे नहीं उतरते, बल्कि असमानता और बेरोजगारी को बढ़ावा देते हैं।

› इसलिए, देसाई के अनुसार, 'कल्याणकारी राज्य' की मुख्य आलोचना यह थी कि यह एक 'भ्रम' है। यह असल में 'जनता के कल्याण' से ज्यादा 'पूंजीवादी व्यवस्था' को बनाए रखने का काम करता है।

उत्तर – ए.आर. देसाई के अनुसार, कल्याणकारी राज्य की मुख्य आलोचना यह है कि इसके 'कल्याणकारी होने के दावे' एक 'भ्रम' मात्र हैं। यह 'गरीबी और असमानताओं को दूर करने' में विफल रहता है, बल्कि 'पूंजीवादी व्यवस्था के हितों' को ही बढ़ावा देता है।

उदाहरण 12. एम.एन. श्रीनिवास ने भारतीय गांवों पर अपने अध्ययन में ब्रिटिश प्रशासकों के किस विचार की आलोचना की?

› पहला, हमें यह समझना होगा कि ब्रिटिश प्रशासक भारतीय गाँवों को किस नज़रिए से देखते थे। वे उन्हें 'स्थिर' (static) मानते थे।

› दूसरा, वे सोचते थे कि गाँव 'आत्मनिर्भर' (self-sufficient) होते हैं, यानी उन्हें बाहर से किसी मदद की ज़रूरत नहीं पड़ती।

› तीसरा, वे गाँवों को 'छोटे गणतंत्र' (little republics) कहते थे, मतलब जैसे छोटे-छोटे देश हों जो अपनी दुनिया में ही चलते हैं।

› अब, श्रीनिवास जी ने इन तीनों ही बातों की आलोचना की। उन्होंने ऐतिहासिक और सामाजिक सबूतों से दिखाया कि गाँव कभी स्थिर नहीं थे, उनमें हमेशा बदलाव होते रहे हैं।

› उन्होंने यह भी दिखाया कि गाँव कभी आत्मनिर्भर नहीं थे, बल्कि वे आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक रूप से अपने आसपास के क्षेत्रों से हमेशा 'जुड़े' हुए थे।

› इसलिए, उनकी आलोचना ब्रिटिश प्रशासकों के इस विचार पर केंद्रित थी कि भारतीय गाँव 'स्थिर, आत्मनिर्भर और छोटे गणतंत्र' होते हैं।

› उन्होंने समझाया कि यह एक गलत धारणा थी और गाँव वास्तव में बदलते और आपस में जुड़े हुए सामाजिक ईकाईयाँ हैं।

उत्तर – एम.एन. श्रीनिवास ने ब्रिटिश प्रशासकों के इस विचार की आलोचना की कि भारतीय गाँव 'स्थिर, आत्मनिर्भर और छोटे गणतंत्र' होते हैं।

उदाहरण 13. एम.एन. श्रीनिवास और लुई डूमों के गाँव संबंधी विचारों में मुख्य अंतर क्या था?

› पहले श्रीनिवास के विचार को समझें: श्रीनिवास मानते थे कि गाँव 'एक आवश्यक सामाजिक पहचान' और 'सामाजिक विश्लेषण की एक इकाई' है। उन्होंने खुद गाँव में रहकर अध्ययन किया और पाया कि गाँव कभी भी 'स्थिर या आत्मनिर्भर' नहीं थे, बल्कि वे हमेशा 'परिवर्तनशील और क्षेत्रीय संबंधों से जुड़े' रहते थे।

› फिर लुई डूमों के विचार को देखें: डूमों का मानना था कि 'जाति जैसी सामाजिक संस्थाएँ गाँव की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण' हैं। उनके अनुसार, गाँव केवल 'कुछ लोगों का समूह' है जो एक स्थान पर रहते हैं, और लोग गाँव छोड़ सकते हैं, पर उनकी जाति या धर्म उनके साथ ही रहता है। इसलिए डूमों ने गाँव को एक 'गुमराह करने वाली श्रेणी' माना।

› मुख्य अंतर स्पष्ट करें: श्रीनिवास ने गाँव को एक महत्वपूर्ण, एकीकृत सामाजिक इकाई माना, जो गतिशील और अन्य क्षेत्रों से जुड़ी हुई है। डूमों ने इसके विपरीत, जाति जैसी संस्थाओं को गाँव से अधिक महत्वपूर्ण माना, क्योंकि वे व्यक्ति के साथ हर जगह बनी रहती हैं, जबकि गाँव केवल एक स्थान है।

उत्तर – श्रीनिवास गाँव को एक 'आवश्यक सामाजिक पहचान' और 'विश्लेषण की इकाई' मानते थे जो हमेशा बदलती और क्षेत्रीय स्तर पर जुड़ी रहती है। वहीं, लुई डूमों 'जाति' जैसी संस्थाओं को गाँव से अधिक महत्वपूर्ण मानते थे, क्योंकि वे व्यक्ति के साथ स्थायी रूप से जुड़ी होती हैं।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• यह अवधारणा बोर्ड परीक्षाओं के लिए महत्वपूर्ण है। शुरुआती चुनौतियों और औपनिवेशिक संदर्भ में समाजशास्त्र की भूमिका को अच्छे से समझ कर उत्तर दें।

• अय्यर जी के जीवन सफर और कलकत्ता विश्वविद्यालय में उनके योगदान पर सीधे प्रश्न आ सकते हैं, खासकर उनकी पृष्ठभूमि को ध्यान में रखते हुए।

• शरत चंद्र रॉय के योगदान, खासकर 'मैन इन इंडिया' जर्नल की स्थापना और छोटानागपुर की जनजातियों पर उनके अध्ययन के बारे में प्रश्न अक्सर 'long answer questions' में पूछे जाते हैं।

• घूर्ये के योगदान पर बोर्ड परीक्षा में अक्सर प्रश्न पूछे जाते हैं। उनके संस्थागत योगदान (विभाग, सोसायटी, जर्नल) और उनके प्रमुख लेखन विषयों को याद रखना बहुत ज़रूरी है।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अक्सर रिजले और घूर्ये के विचारों के बीच अंतर पूछा जाता है, इसलिए दोनों के मुख्य तर्कों और घूर्ये की आलोचना के बिंदुओं को अच्छे से याद रखना।

• डी.पी. मुकर्जी के 'बहुआयामी बुद्धिजीवी' पहलू और भारतीय परंपराओं पर उनके विचारों को अच्छे से तैयार करना, यह बोर्ड परीक्षा में अक्सर पूछा जाता है। उनके जीवन के महत्वपूर्ण पड़ावों और मुख्य किताबों के नाम भी याद रखना।

• डी.पी. मुकर्जी की 'जीवंत परंपरा' और 'परिवर्तन के गैर-आर्थिक कारण' पर अक्सर सीधे प्रश्न आते हैं। इसे उदाहरणों के साथ अच्छे से समझ लेना।

• ए.आर. देसाई पर बोर्ड परीक्षा में अक्सर उनकी मार्क्सवादी विचारधारा और 'The Social Background of Indian Nationalism' पुस्तक के बारे में प्रश्न आते हैं। उनकी राष्ट्रवाद की व्याख्या को ज़रूर समझें।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। देसाई द्वारा 'कल्याणकारी राज्य की विशेषताओं' और 'उनकी आलोचना' को स्पष्ट रूप से समझाकर लिखें, साथ ही उनके निबंध का नाम 'The Myth of the Welfare State' ज़रूर याद रखें।

एक नज़र में रिवीज़न

› भारत में समाजशास्त्र: 1919 बंबई विश्वविद्यालय, औपनिवेशिक चुनौतियाँ, आधुनिकता का दोहरा अनुभव।

› अय्यर: क्लर्क से भारत के प्रथम सामाजिक मानवविज्ञानी; कलकत्ता में PG विभाग के संस्थापक।

› शरत चंद्र रॉय: वकील से मानवविज्ञानी, छोटानागपुर की जनजातियों का गहन अध्ययन, 'मैन इन इंडिया' जर्नल।

› जी.एस. घूर्ये: भारतीय समाजशास्त्र के संस्थापक; मुंबई विश्वविद्यालय, इंडियन सोशियोलॉजिकल सोसायटी.

› घूर्ये ने रिजले के जाति-प्रजाति सिद्धांत को केवल 'उत्तरी भारत' के लिए आंशिक सत्य माना।

› डी.पी. मुकर्जी: बहुआयामी बुद्धिजीवी, भारतीय परंपराओं पर बल, लखनऊ वि.वि.

› डी.पी. मुकर्जी: भारतीय समाज की केंद्रीयता, जीवंत परंपरा, अनुभव-आधारित परिवर्तन।

› ए.आर. देसाई: मार्क्सवादी, 'The Social Background of Indian Nationalism', राष्ट्रवाद का सामाजिक-आर्थिक विश्लेषण।

› देसाई: कल्याणकारी राज्य के दावे 'भ्रम', पूंजीवादी हितों को बढ़ावा।

› एम.एन. श्रीनिवास: ग्रामीण अध्ययन, ऑक्सफोर्ड प्रशिक्षण, गाँव को 'सामाजिक पहचान' माना।